130
558 (P)
H
MICRO FILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1282
10/91

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No. 558

Prem

19-1

891.431
P887M

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED
8 AUG. 193

* ओ३म् *

मरदाना भगतसिंह।

लेखक—

श्रीयुत 'प्रताप' (स्वतन्त्र)

प्रकाशक—

प्रभूदयाल डंडेवाले भजनोपदेशक

जलाली जिला अलीगढ़।

(मौजूदा निवास स्थान देहली)

मूल्य -)॥

मुद्रक—कुं० वीरेन्द्र सिंह भदौरिया

राजेन्द्र प्रिंटिङ्ग प्रेस, खारीबावली देहली

मरदाना भगतसिंह

NATIONAL ARCHIVES
No. 658
Date 14-12-71
GOVT. OF INDIA

(१)

जगदीश को हैं प्रथम नमस्कार हमारा ।
जिसने कि रचा शक्ति से ब्रह्मांड यह सारा ॥
फिर बोलिये उन वीर शहीदों का जयकारा ।
जो चढ़ गये हैं फांसी पै न धर्म को हारा ॥
जिनकी कि धाक का था यहां पै हकूमत को भय ।
वह आज फांसी लगा करके होगई निर्भय ॥

(२)

वह कौन शेर वीर थे है यही दिखाना ।
जिनके कि लिये रो रहा है आज ज़माना ॥
फांसी भी जिन्हें दिवाली का हुआ लगाना ।
उस काली रात में ही हुआ काम भुगताना ॥
तैंतीस करोड़ जिनके लिये भारत निवासी ।
इक स्वर से मांगी प्राण भिक्षा बख्श दो फांसी ॥

(३)

फिर भी समझी हुकूमत ने फाँसी ही हलाल ।
प्रबन्ध के लिये हर जगह दी फौज पुलिस डाल ॥
जिनके लिये महात्मा जी पं० जवाहर लाल ।
सुन रो पड़े फांसी को दिल में छा गया मलाल ॥

यह सुखदेव राजगुरु भगतसिंह की कहानी।
दुनियां में बनी रहेगी :यह तिरङ्गी निशानी॥

(४)

बिछी थीं आंखें अभी कारागृह के द्वारों पर।
लगे थे कान वीर भगतसिंह के नारों पर॥
सुखदेव राजगुरु हा ! भारत सितारों पर।
कुछ सोच रहा था मुल्क भी इन होनहारों पर॥
यह सोचते ही होगई बस दुख की कहानी।
पाठक वही अनीति है तुम्हें सुनानी॥

(५)

अब सुनो जिला लायलपुर में बङ्गा ग्राम था।
सन् उन्नीस सौ हुआ सात में वहां जन्म आपका॥
यह जन्म से ही वीर इक मैदाने मर्द था।
इस युग का था शिवाजी दुश्मन को दर्द था॥
बाल्यावस्था में निज मित्रों का दल बना।
यह खेला करते सैनिकों की तरह युद्ध कला॥

(६)

एक रोज पिता किशनसिंह की बैठे थे जब गोद।
किसी ने पूछा भगतसिंह से देख के विनोद॥
बेटे भगतसिंह सदा खुश रहो आमोद।
तुम बड़े होके करोगे क्या पूछा खोद खोद॥
यह सुन के दिया बच्चे ने जवाब जोर से।
तुतलाती कहा बोली में यों सुनो गौर से॥

(७)

मैं खलूंगा का बला होके तुम्हें सुनाऊं ।
सिपाही नाल लडूंगा दबूं का चलाऊं ॥
न डलूंगा किसी से कभी भाग के आऊं ।
खोल चंगो २ बेचूंगा दंबूके बताऊं ॥
यह सैनिक भाव चाव जब देखे बाल के ।
सब दङ्ग हुये वाक्य सुन इस्तक बाल के ॥

(८)

प्रारम्भिक शिक्षा पाई थी अपने ही ग्राम पर ।
स्कूल था वहाँ एक बड्डा ग्राम धाम पर ॥
फिर दयानन्द ऐंग्लो वैदिक नाम पर ।
प्रसिद्ध है स्कूल यहां लाहौर मुकाम पर ॥
वहां भरती किया आपको होनहार जानकर ॥
यह पढ़ते रहे गौर से वहां और ध्यान धर ॥

(९)

एन्ट्रेन्स में ही पढ़ते थे अभी तो हाल में ।
असहयोग का भी चला चक्र उसी काल में ॥
एक राष्ट्रीय कालेज खुला इसी साल में ।
वहां पढ़ने लगे आन्दोलन की आ उछाल में ॥
क्रान्तिकारी राजनैतिक पढ़ि २ के इतिहास ।
शौक था अध्ययन का करते थे अभ्यास ॥

(१०)

थे उत्तम पुस्तकों के इन्हें पृष्ठ पृष्ठ याद ।
और पढ़ाई में कभी नहीं लाते थे प्रमाद ॥
ऐतिहासिक नाटक खेल २ करते थे दिल शाद ।
सदा ही गाते वीर रस पुस्तकों के नाद ॥
यहां ही से देश सेवा का इन्हें प्यार हो गया ।
अरु आजादी का भूत सर सवार हो गया ॥

(११)

इन्हीं दिनों उगला फिर आपने वह जहर ।
जो फूट निकला युवकों में बन आजादी की लहर ॥
सङ्गठित हो सब गाने लगे राष्ट्रीय बहर ।
भारत सभा नौजवां का जमा तबसे यहां पैर ॥
आप ही के हाथ में थी इसकी बागडोर ।
झट स्थापित होने लगी शाखायें चहुं ओर ॥

(१२)

सन् १९२७ का इत आ रहा था साल ।
उत सगाई का हो रहा था सम्बन्ध भी उस काल ॥
जब मालूम हुआ भगतसिंह को इसका पूरा हाल ।
तो भाग गये मकान से देके घर में टाल ॥
"प्रताप" कार्यालय में किया कानपुर मुकाम ।
बलवन्तसिंह नाम धर वहां करने लगे काम ॥

(१३)

सन १६२६ की अप्रैल आठ को।
बम दुर्घटना ऐसेम्बली में हुई पाठको ॥
सुन धड़ाका इजलास भी पहुंचा उचाट को।
वहां होश कर गये कूच सबके मुर्दे घाट को ॥
होगई थी धुआं से वहां दिन में काली रात।
बोल सबके बन्द थे और कांपता था गात ॥

(१४)

आ धमकी झट पुलिस भी वहां करने को गिरफ्तार
अंधेरे में आँखें फाड़ें देखे हो हुशियार ॥
जब देखा खोज करने में यह हो रहा लाचार।
तब बी० के० दत्त भगतसिंह ने कहा यों ललकार ॥
क्या ढूंढ़ते हो किसको कहो अन्धों की समान।
हम खड़े हैं लो पकड़ लो दो वीर नौजवान ॥

(१५)

यह हमी ने ही ढाया अभी गजब का गोला।
आया है जड़ अन्याय को दें बम का गोला ॥
अब करने नहीं देंगे अपने देश को पोला।
बहुत खाया लूट २ समझ के हमें भोला ॥
चेतावनी यह दी है केवल बम का है नाम।
अब होता बम उड़ा देते असेम्बली तमाम ॥

पाठक इसी वक्त से यह हो गये गिरफ्तार।
बी० के दत्त साथी और भगतसिंह सरदार॥
जेल के भोजन में होने लगा दुर्व्यवहार।
तब कई मास तक करी भूक वहां हड़ताल॥
अदालत में भी मोर्चे को दिया वह जवाब।
सुन सेशन जज भी लगा जैसे देखने ख्वाब॥
इनसाफ भला धरा कहां कानून निरालों में।
है भेद जहां पे जुदा २ गोरे कालों में॥
संकेत कर यों दरशाया का हवालों में।
बयान सुन के दे गये सब उंगली कानों में॥
प्रताप 'स्वतन्त्र" दंड मिला आजन्म कारा वास।
पर भगतसिंह के सोन्डर्स का अभियोग लगा खास॥

ब तर्ज राधेश्याम।

दोहा—बी० के० दत्त को आजन्म हो गया कारावास।
भगतसिंह को और इक, लगा मुकद्दमा खास॥
इनके सोन्डर्स की हत्या का, एक और मुकद्दमा लगाया गया।
उस ही अभियोग में फांसी का, बस हुक्म इन्हें झट सुनायागया॥
दोहा—फांसी की जब से सुनी, भगतसिंह सरदार।
मारे खुशी के बढ़ गया, तब से वजन अपार॥
मारे खुशी के उछल पड़े बस फूले नहीं समाने लगे।
फांसी मेरी प्यारी फांसी, फांसी के गीत ही गाने लगे॥

है अहोभाग्य उस दिन मेरे, जिस दिन फाँसी चढ़ जाऊंगा।
भारत माता से उऋण होकर मैदान को सर कर जाऊंगा॥
अब लग रही है यह अभिलाषा, कब होके विदा यहां से जाऊं॥
जिससे मैं लेकर जन्म जल्दी, फिर लौट के यहां ही आजाऊं।
दोहा—आ करके फिर मैं करु पूरे निज अरमान।
दिल में इकट्ठे जा रहे, किये हुये सामान
हे जननी बूढ़ी भारत मा, तुझे कैद ही छोड़े जाता हूं।
करना मेरे अपराध क्षमा, मैं मुहं को मोड़े जाता हूं॥
है विनय मेरी यह ईश्वर से, फिर भी दे तेरे जन्म मेरा।
तेरी ही खेलू गोदी में, जिससे निकले अरमान मेरा॥
जाता जलता था दिल मेरा, जब गुलाम देखता था तुझ को।
अब सूली पे चैन से सो ऊंगा, सौभाग्य मिला है यह मुझको॥
दो०—इधर अनेकों उठ रहे, भगत सिंह को ख्याल।
उधर पिता ने रहमकी, अपील करी तत्काल॥
भारत के लाखों नर नारी ने मिल भिक्षा मांगी प्राणों की।
पर नहीं किसी की सुनी गई, आखिर जिद रही हकुमत की॥
जब भगत सिंह को यह सारा, मालूम हाल हुआ।
कि अपिल करी है पिताजी ने, यह सुनकर बड़ा मलाल हुआ॥
दो०—लाहौर मार्च तीन को, सेंट्रल जेलस्थान।
लघु भ्रातको पत्रिका, लिखे भगतसिंह ज्वान॥
हा फांसी के पूर्व हो, अन्तिम पत्र सुधार।
लिखा जो भगतसिंह ने दिया, है यह उसका सार॥

॥ गायन नं० ८ ॥

मेरे प्यारे अजीज भाई कुलतारसिंह,
देख आंखों में आंसू तुम्हारी वीरन।
आज पहुंचा जो सदमा कहूं क्या तुम्हें,
छाती भर आई पापिन हमारी वीरन ॥ मेरे ॥
मेरे प्यारे न हिम्मत को हारो जरा,
करो हासिल तुम दिल से निज तालीम वीरन।
ध्यान रखना सदा अपनी सेहत का,
चिन्ता करना न कोई हमारी वीरन ॥ मेरे ॥
अब कहूं क्या मुसीबत भी आई अगर,
बांधा जालिम ने अब कि कमर जुल्म पर।
देखें हम भी जुल्म की अब इनतहा है क्या,
यही दिल में अड़ी अड़ हमारी वीरन।
क्यों खफा दहर से हो रख से गिला से,
है अमर आतमा अब हमारी वीरन।
कोई दम का हूं महमान ऐ अहले महफिल,
बुझा चाहता है दीपक हजारी वीरन ॥ मेरे ॥
है मगर कोई अफसोस इसका नहीं,
आओ हवा में रहेगी बिजली ख्याल की।
यह मस्त खाक फानी रहे न रहे,
वृथा इसके है सोच विचारी वीरन ॥
घर की रख के तबाई पर आता है ख्याल,
मर्जी सैयाद की कफस में लोटूं खाक पर।

खुश प्रताप 'स्वतन्त्र' रहो अहले वतन,

हम करते सफर की तैयारी योरन ॥

दो०—यही अन्तिम पत्र था=था यहाँ तक ही प्यार।

अन्तिम ही अब जानना—मित्रो कारागार॥

इत तेईसकी शामको बोल जेलके द्वार।

कहा उन्हें हो जाइये अब फांसीको त्यार॥

सुखदेव भगतसिंह राजगुरु यह सुन करके हुलसाने लगे।

मिल करके तीनों वार वहीं=इक स्वरसे गाना गाने लगे॥

गायन

जिसने दिया है फैसला उसका प्रभु भला करे।

लाजिम है हमसे वीरको फांसी पे यों चढ़ा करें॥

इनसाफ जाय भाड़में देते तो जल्दी फैसला।

जिससे कि जा हुजूरीमें पेट तो यह पला करे॥

खाली नहीं है बैठना जाकर हमें भी स्वर्गमें।

कहते हैं सबको साफ यहाँ चाहे कोई जला करें॥

प्रबन्ध करलो चाहे तुम अभीसे यहाँ पै स्वर्गका।

बस अगर वहां चल पड़ा पुलिस कहीं पिला करे॥

फांसीका हमको डर नहीं=होता "स्वतन्त्र" गर वतन।

ऐसा समय जनम जनम चाहे हमें मिला करे॥

दो०—यों शेरों कीसी तरह=गर्ज रहे वहां वीर।

चेहरों प मुसकहराट थी मारे दमक शरीर॥

झट कहा तभी उन वीरोंने=इस फांसीसे तुम छुड़वाकर।

बेहतर है किस्सा खतम करो=गोलीसे हमको उड़वाकर॥

लेकिन यह इतना सुनने को यह ताब कहो वहाँ किसको थी।
इनकार कर दिया सुनते ही शेरदिल ठानी वहाँ फांसी की॥

दो०—यह सुनते ही कह दिया वीरोंने ललकार।
मनवानेकी अब तुम्हें हमें नहीं दरकार॥

गजल—जल्लादसे।

दो०—शहीदोंके फैसलेके मित्रो अनुसार।
फांसीको सुखदेवजी प्रथम बढ़ा ललकार॥

यह देख भगत सिंह बोल उठा हट जाओ मुझको जाने दो।
उत राजगुरु भी बोल उठे, नहीं पहले मुझको जाने दो॥
आखिरको यही तय पाया, सुखदेव चढ़ गया फांसीपर।
भारत माताका शीश नवा, कुर्बान हो गया फांसीपर॥
जब फांसीके तख्तेसे, सुखदेवकी लोनी लाश हटा।
इतनेमें सीना फुलाते हुये, सरदार भगतसिंह आन डटा॥
उन चाह भरी निगाहोंसे, फांसीके तख्तेको देखा।
चुम्बन करके प्यार किया, और उसके आगे सर टेका॥
और डाउन २ यूनियन जेक, बृटिश झण्डेका सर्वनाश।
यह नारे लगाये जोरोंसे, एक बारा गूंज गया आकाश॥
यह कहते २ लटक गये, फिर नहीं दुबारा आंख उठी।
कुछ क्षणको बिजलीसी चमकी और पृथ्वी माता कांप उठी॥

दोहा—राजगुरु यह देखके भर लाये नैनों नीर।
सबके पीछे मैं रहा हूं फूटी तकदीर॥

गायन चं० त०

क्या खता थी मेरे प्यारे मित्रो कहो।
जो मुझको पिछाड़ा गये छोड़कर॥

क्या इसी युगमें हा, हा पापी हुआ।

पहिले चल दिये मुझसे यों मुंह मोड़कर ॥

दो०—क्षण ही मात्रके वास्ते, हो गये वीर अधीर।

फिर बोले यों धाड़कर दिलमें बांधी धीर ॥

अच्छा लो मैं भी आता हूं, उसी स्वर्गकी सीडीसे।

कर लिया रास्तायाद खूब, इस फांसी नामकी सीढ़ीसे ॥

हा—परस्पर लड़ने वाले, बरबाद किस तरह होते हैं।

और आजादीके मतवाले, आजाद इस तरह होते हैं ॥

यह कह कर चढ़ गये फांसीपर, और भारत मांकी जय बोली।

इक क्षणमें हो गये बलिदान, फिर आंखे हो गई बन्द बोली ॥

दो०=तेईस मार्चको हुए, शाम समय बलिदान

लगभग साडे सात बजे, या आठ अनुमान ॥

जब तक है लेखनी कवियोंका तब तक यह नाम अमर रहेगा।

'प्रताप' स्वतन्त्र इन वीरोंका, नहीं खून कभी बिफल होगा ॥

भजन

उठो २ हे भारत-वीरो ऋषियोंकी प्यारी सन्तान।

स्वतन्त्रताके महा समरमें हो जाओ सहर्ष बलिदान ॥

धर्म्म युद्धमें मरना भी है अमर स्वर्ग पदको पाना।

रणभेरी बज चुकी वीर वर पहिनो केशरिया बाना ॥

माताके सच्चे पूतोंकी आज कसौटी होना है।

देखें कौन निकलता पीतल कौन निकलता सोना है ॥

जो उतरेगा आज युद्धमें वही शूर है मरदाना।

रणभेरी बज चुकी वीर वर पहिनो केशरिया बाना ॥

बिना आत्म बलिदानोंके कब किसने स्वतन्त्रता पाई।
लाखों भेंट हुए माताके चरणोंमें तब वह पाई॥
आज हमें भी दुनियांको अपना पौरष है दिखलाना।
रणभेरी बज चुकी वीरवर पहिनो केशरियाबाना॥
साठ वर्षके बूढ़े गांधी देव बढ़े जाते हैं आज।
कैसे तुम्हें युवक कहलाते उसमें तनिक न आती लाज॥
इस विडम्बनामय जीवनसे तो अच्छा है मरजाना।
रणभेरी बज चुकी वीरवर पहिनो केशरिया बाना॥

मरदाना भगतसिंह।

सरताज नौजवानोंका मरदाना भगतसिंह।
आज़ादीका दीवाना था मस्ताना भगतसिंह॥
लाहोरका था रहने वाला शेरे बबर=दिल।
आज़ादीकी थी=चाह उसे मस्ताना भगतसिंह।
होती थी मीटिंग एसेम्बलीमें जिस दम फेंका बम॥
बम केसमें पकड़ा गया मस्ताना भगतसिंह।
देता था लाल पर्चे वह लाहौरके थानोंमें॥
हो जाओ होशियार यह कहता था भगतसिंह।
राजगुरु सुखदेव दोनों मित्रों को लेकर।
फांसी चढ़ स्वर्ग सिधारा वह मस्ताना भगतसिंह॥

गज़ल जल्लाद से

लगा करके फाँसी ही क्या मान होगा।
रहे याद तू भी परेशान होगा॥

अगर जान मांगी तो क्या तुमने माँगा ।
मेरी जान से तुझको नुकसान होगा ॥
लगाले तू फांसी करो शाद दिल निज ।
यह तेरे ही रोने का सामान होगा ॥
नहीं होगा इससे अमन याद रखना ।
तेरा तंग हरदम यहां औसान होगा ॥
हम आते हैं लेकर जन्म फिर दुबारा ।
वही संग में बमका सब सामान होगा ॥
दलेंगे हम छाती पै फिर मूंग तेरी ।
उसी बम का हर जहां पैं व्याख्यान होगा ॥
हमें आश पूरी नजर आरही है ।
कि कुछ दिन का तू और मेहमान होगा ॥
चढ़ादे तू फांसी समझ हमको कांटा ।
स्वर्ग का हमें यह तो विमान होगा ॥
सफल हुआ उसका जन्म लेना जहां में ।
जो अपने वतन पै यों कुर्बान होगा ॥
अमर यहां पै कब तक भला तुम रहोगे ।
आखिर तो प्राणों का अवसान होगा ॥
प्रभू से करा लेंगे इन्साफ वहां पर ।
फिर देखेंगे कितना वहां अभिमान होगा ॥
सुनो अर्ज भारत के तुम नौ जवानो ।
मेरे बाद तुम्हारा हो इम्तिहान होगा ॥
यह व्यर्थ नहीं जायगा खून हमारा ।
स्वतन्त्र इसी से हिन्दोस्तान होगा ॥

युवक की व्याख्या

शेर—किस काम का है दरिया जिसमें नहीं रवानी।
अब जोश ही नहीं है किस काम की जवानी॥

टेक—सबक कोई हमसे सिखो जवानी का।
हम जवान उसको कहते है अड़जाये जहां अड़ जाये।
दिल का मर्द हिम्मत का धनी और आन पर अपनी मर जाये
किसी का कभी अहसान न ले सुधरे चाह काम बिगड़जाये।
आये न खम गर्दन में जरा चाहे धड़ से शीश उतर जाये॥
अनगिन कठिनाई और अनेक बाधाओं से मारग भर जाये।
लेकिन सबको तै करता हुआ करना हो जो कुछ करजाये॥
बन पर्वत चाहे पड़े लांघना समुद्र पानी का॥ १ ॥
है युवा वही अपने अन्दर जो शक्ति का सञ्चार करे।
चना अकेला होकर भी सौ भाड़ों को मिसमार करे॥
छै महीने का राह छोड़ कर छै दिन का अख्त्यार करे।
बिन किश्ती जल अथाह में सौ मील का सागर पार करे॥
पूरबको जल बहे तो अपनी पश्चिमको रफ्तार करे।
बिन बाँधे तलवार भी जो लाखोंमें जाके वार करे॥
न दहशत माने पापी राजाकी नादर शानीका ॥२॥
हरएक युवकके जीवनका यही रसूल सबसे आला।
सन्तोषको सन्ताप समझे और विश्रामको विषका प्याला॥
रक्तकी भांति नाड़ियोंमें बहे अति अशान्तिकी ज्वाला।
हृदयमें प्राणोंकी जगह हो शक्तिने डेरा डाला॥
हर दम और हर घड़ी रहे उद्यमके मदमें मतवाला।
कायरता कमजोरीको दे निकाल मुंह करके काला॥

नवयौवन पुष्टिकारक चूर्ण (दवा नं०२)

यह चूर्ण प्रमेह, धातुक्षीणतापर परमोत्तम है इसके लगातार पन्द्रह दिन तक खानेसे, बल वीर्य बढ़ता व धातु पुष्ट होती है इसके खानेसे, इतनी रुकावट होती है कि स्त्री पास आते ही वह उसकी दासी बन जाती है, जिन्हें कोई रोग न हो वे भी इस चूर्णको खाकर हृष्ट पुष्ट हो सकते हैं, खूब आजमाई हुई दवा है, फेल नहीं होती। कीमत फी डिब्बा एक रुपया डाक महसूल के ।≠) आने अलग। आपके लिए एक डिब्बा काफी होगा, खाने-की तरकीब डिब्बेके साथमें भेजी जायगी।

तिला नामर्दी (दवा नं० ६)

इसकी परीक्षा हजारों बार हो चुकी है, यह लिंगेन्द्रियको खूब मजबूत, मोटी और लकड़ीके समान सख्त बना देता है, इसके लगानेसे नसोंकी खराबी जो कि हस्तक्रिया या गुदामैथुन या एक दूसरेसे नाजाइज चिपटने (यानी मर्द मर्दसे) हुई हो, जाती है। अगर नसोंकी खराबीसे मैथुनेच्छा नहीं होती तो वह इस तिलेसे आराम हो जाती है, पर अगर वीर्यकी कमीसे मैथुनेच्छा नहीं होती तो तिला क्या कर सकता है? अतः तिला लगाना चाहिये और वीर्य वृद्धिके लिये नवयौवन पुष्टिकारक कारक चूर्ण मंगाकर खाना चाहिए, तभी पूरा आनन्द आ सकता है। अगर आप कामनीको खुश करके वशमें करना चाहते हैं, अगर आप नारी सुख भोगना चाहते हैं, अगर आप पुत्र सुख देखना चाहते हैं तो इस तिलेको लगाइयेगा। कितने दिनोंका नामर्द हो इस तिलाके लगानेसे शर्तिया आराम हो जाता है। एक शीशीका मूल्य एक रुपया डाक महसूलके ।≠) आने लगाने की तरकीब शीशीके साथ भेजी जायगी।

मैनेजर प्रभूकार्यालय जलाली

जिला अलीगढ़